कबीर

व्यक्तित्त्व और विचार

संपादक

डॉ. अशोक मर्डे डॉ. गंगाधर बिराजदार

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-922425-4-5

प्रकाशक

शिल्पा प्रकाशन

शिव-कांची, शेल्हाळ रोड,

उदगीर ४१३५१७

© - publisher

संस्करण प्रथम : २०१४

मूल्य - दो सौ पचास रूपये

अक्षरसज्जा - समृध्दि एन्टरप्रायजेस्, तुलजापुर

मुद्रक - आर.आर. ग्राफीक्स, एम.आय.डी.सी., लातूर

Kabir Vyaktitv Aur Vichar (Hindi)

Edited by

Dr. Ashok Marde

Dr. Gangadhar Birajdar

Price : Rs. 250.00

Scanned with OKEN Scanner

१३ कबीर वाणी में जीव का स्वरुप
डॉ. सुरेशकुमार केसवानी ९२

१४ कबीर का मानवतावाद
प्रा. डॉ. प्रवीण कांबळे ९८

१५ संत कबीर के साहित्य में बौध्द दर्शन
डॉ. पी.व्ही. महालिंगे १०२

१६ कबीर का सामाजिक दर्शन
कु. संगीता सरवदे १११

१७ पूर्ववर्ति हिन्दी काव्य और कबीर काव्य में विद्रोह
प्रा. डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे ११६

१८ कबीर काव्य का महत्व
प्रा. कांबळे बालीका १२१

१९ कबीर की निर्गुण भक्ति
प्रा. बागवान एम.एम. १२४

२० कबीर की विरहभावना
प्रा.डॉ. सौ. मंगला श्री कठारे १३८

२१ कबीर की भक्ति भावना
प्रा. सुचिता गायकवाड १४१

२२ कबीर चिंतन कें विविध आयाम
डॉ. रेखा गाजरे १४७

२३ कबीरदास और उलटबांसी
डॉ. साकोळे दत्ता शिवराम १६१

२४ धर्मनिरपेक्षता और संत कबीर
डॉ. गंगाधर धुळप्पा बिराजदार १६३

२५ कबीर एक समाज सुधारक
डॉ. निलकंठगिरी १६७

२६ कबीर साहित्य का मूल्यांकन
डॉ. हाशमबेग मिर्झा १७१

Scanned with OKEN Scanner

19

कबीर की निर्गुण भक्ति

प्रा.बागवान एम.एम.
हिवडी कॉलेज, हिवडी ता. माण जि. सातारा

मनुष्य जीवन में जीवनगत परिश्ष्कार हेतु धर्म नामक संकल्पना समय के साथ-साथ जुड़ गई | धर्म के साथ-साथ ईश्वर नामक संकल्पना का भी अविष्कार हुआ | भगवान एवं ईश्वर वह असीम तत्व है, जो मनुष्य के विचार शक्ति के दायरे से परे है| मनुष्य एकांत में बैठकर,जब एकांत में सोचता है, की सारे सृष्टी का निर्माता कौन है ?तो उसकी सोच इस बात को लेकर अत्यंत छटपटा जाती है, पर आगे जब उसके विचार शक्ति का दायरा बढ़ता है , तो सारा ब्रम्हांड सामने आकर खड़ा होता है | वह इस बात से चकित रहता है कि,इतना बडा ब्रम्हांड ? इसका संचालन कैसे होता है? तो फिर ईश्वर एवं भगवान नामक तत्व ही आकर खडा हो जाता है | मनुष्य जीवन की व्याख्या करनेवाले कई विद्वान एवं आचार्य हुए | उनके विचारों से यह तो स्पष्ट हो गया है, की मनुष्य इसी प्रकृति के निर्माता ईश्वर का अंश है | एक अंशी है, और ईश्वर पूर्ण है | मनुष्य अत्यंत स्वार्थ लोलुप है | अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए वह जीवन में अलग अलग पैंतरे अपनाता है | भवसागर में जीवनरुपी नाँव को तरने के लिए और दुख,दर्द पीडा भरे तुफानों के तथा गलत राह रुपी आंधियों के चपेट से बचने के लिए वह धर्म साधना में जुड जाता है | धर्म नामक माध्यम से भगवान से जुडनेका उसे अवसर मिल जाता है | वह धर्म ग्रंथों एंव तत्वों द्वारा अपने जीवन का संचालन करता है | अकसर देखा गया की, वह अपना जीवन सुरक्षित करने के लिए चापलुसी करने से भी नहीं चूकता | परिणाम स्वरुप वह भक्ति नामक पवित्रमय तत्व के साथ जुड जाता है|

भगवान वह होता है, जो भक्ति के लिए अमानवीय अर्थात साधारण मनुष्य से परे जो गुण है, उन तमाम गुणों का संचित रुप कहा जा सकता है | भगवान की भक्ति करने वाला भक्त होता है| भगवान एवं ईश्वर के गुण कथन हेतु समग्र सामग्री जुटाकर,जो सात्विक रुप से जो प्रक्रिया चलती है, वह भक्ति तत्व है | आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "श्रध्दा, प्रेम, अनुराग का योग भक्ति कहलाती है | यहाँ पर सात्विकता की बात तो है, पर जिसके भीतर एक स्वार्थ ही छिपा हुआ है | इसमें उत्पन्न हुआ अनुराग,प्रेम यह कृत्रिम ही तो है | पर श्रध्दा की जब बात आती है, तो वह भगवान जो कई गुणों सें महामंडित है, इसके परिणाम स्वरुप ही श्रध्देय

Scanned with OKEN Scanner